FRENCH QUEST FOR SECURITY-2

FOR:P.G.SEM-2,CC-6,UNIT-1
BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
P.G.DEPT.OF HISTORY
MAHARAJA COLLEGE
ARA.

तीनों देशों के सामान्य उद्धेश्य

लघु गुट में शामिल तीनों देशों का निर्माण ***ऑस्ट्रिया- हंगरी*** के विघटन के पश्चात हुआ अतः तीनों राज्य चाहते थे की वार्साय संधि की प्रादेशिक व्यवस्था बनी रहे। वर्साय संधि के तहत उनको जो प्रदेश प्राप्त हुए हैं वह कभी वापस न लिया जाये।

- चेकोस्लोवाकिया की आंतरिक स्थिति अच्छी नहीं थी। उसकी राजधानी सीमा पर स्थित थी अतः वह आसानी से जर्मनी का शिकार बन सकता था।

तीनों देशों के सामान्य उद्धेश्य

- युगोस्लाविया की आंतरिक स्थिति अच्छी नहीं थी तथा बड़े देशों के मध्य स्थित होने के कारण रोमानिया भी वाह्य आक्रमण की आशंका से भयभीत रहता था। इस लिहाज से अपने समान उद्देश्यों की पूर्ति हेतु 1920- 21 में फ्रांस के साथ परस्पर मैत्री संबंध स्थापित हुआ ,जो ***लघु गुट*** के नाम से जाना जाता है।
- फ्रांस ने इन तीनों देशों के साथ अलग-अलग संधि की ।***1923*** में उसने ***चेकोस्लोवाकिया***, ***1927*** में ***युगोस्लाविया*** तथा ***रोमानिया*** से से संधि कीं।ये संधिया ***15 वर्ष*** तक चलती रही।

लघु गुट का महत्व

- लघु गुट के साथ संधि के फल स्वरुप फ्रांस की शक्ति में वृद्धि हुई तथा उसकी सुरक्षा दृढ़ हो गई। जर्मनी की ओर से भावी आक्रमण के समय फ्रांस को इन देशों से मदद मिलती ।हिटलर के उदय होने तक यूरोप की राजनीति में इस ग्रुप की प्रधानता रही।
- महायुद्ध के पश्चात स्थापित नए राज्यों की आर्थिक स्थिति सोचनीय थी तथा सैन्य साधन पर्याप्त नहीं थे ।

लघु गुट का महत्व

- ये राज्य छोटे-छोटे थे तथा फ्रांस से दूर थे। अब इनकी सुरक्षा का भार भी फ्रांस पर आ गया। इस लिहाज से फ्रांस को पूर्वी तथा पश्चिमी यूरोप की समस्याओं में हस्तक्षेप करना अनिवार्य हो गया।
- पोलैंड तथा चेकोस्लोवाकिया में काफी संख्या में जर्मन लोग निवास करते थे।इससे अंतरराष्ट्रीय राजनीति में जटिलता का आना स्वाभाविक था। पड़ोसी राज्यों के साथ इनका झगड़ा हमेशा होता रहता था।ऐसे में फ्रांस की सैन्य जिम्मेदारियां बढ़ गई थी।

प्रतिक्रिया

फ्रांस ने अपनी सुरक्षा के लिए जिस गुट बंदी का जाल बिछाया था इसकी प्रतिक्रिया होनी स्वभाविक थी। इटली तथा रूस ने सशस्त्र गुटों का निर्माण करना शुरू कर दिया । इससे यूरोप में पुनः वही स्थिति उत्पन्न हो गई जो कि प्रथम महायुद्ध से पूर्व थी।

- ***बोल्शेविक रूस*** तथा पराजित ***जर्मनी*** मित्र राष्ट्र को घृणा की दृष्टि से देखते थे।इन्होंने 16 अप्रैल 1922 को ***रैपेलो की संधि(Rapallo Agreement***)कर ली। रूस ने अपने पड़ोसियों के साथ अनाक्रमण समझौते करने प्रारंभ कर दिये। 1925 में तुर्की, 1926 में अफगानिस्तान ,लिथुआनिया तथा जर्मनी और 1927 में फारस के साथ संधि की।

प्रतिक्रिया

- फ्रांस की गुटबंदी ने इटली को भयभीत कर दिया। उसने 1926 में अल्बानियाँ से ,1927 में हंगरी से, 1928 में तुर्की तथा यूनान से और 1930 में ऑस्ट्रिया के साथ मैत्री संबंध स्थापित किये।
- इटली की गुट बंदी से बाल्कन राज्यों तथा लघु गुट के राज्यों को खतरा उत्पन्न हो गया। रोमानिया ,तुर्की तथा यूनान ने परस्पर मैत्री संबंध स्थापित कर लिये।यह ***बाल्कन पैक्ट*** के नाम से जाना जाता है।

फ्रांसीसी सुरक्षा का अंत

- इन संधियों के फलस्वरूप अंतरराष्ट्रीय जगत में फ्रांस की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई जो हिटलर के उदय तक बनी रही। हिटलर के उदय के साथ ही फ्रांस द्वारा बनाए गए संधियों का जाल छिन्न-भिन्न होना प्रारंभ हो गया ।हिटलर का मुख्य उद्देश वर्साय संधि को भंग कर यूरोप में जर्मनी की पूर्व प्रतिष्ठा स्थापित करना था। ***1935*** में हिटलर ने ***सैन्य सेवा*** अनिवार्य कर दी। ***1936*** में उसने ***राइन*** के निःशस्त्र प्रदेश पर सेनाएँ भेज दी । इटली तथा इंग्लैंड की सहायता के अभाव में फ्रास जर्मनी के इस कदम को रोक न सका।

फ्रांसीसी सुरक्षा का अंत

- इससे फ्रांस के मित्रों का उसकी शक्ति में विश्वास नहीं रहा।हिटलर के उत्कर्ष से पोलैंड तथा बेल्जियम की सुरक्षा खतरे में पड़ गई ।अतः 1934 में ***पोलैंड*** ने ***हिटलर*** से ***10 वर्ष*** के लिए अनाक्रमण समझौता कर लिया ।1937 में इसी प्रकार की एक संधि ***बेल्जियम*** के साथ भी कर ली गयी ।इस प्रकार फ्रांस की सुरक्षा का प्रयास नष्ट हो गया।

लोकार्नो पैक्ट

- अंतर्राष्ट्रीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधान के लिए ***अक्टूबर 1924*** में हुए ***जेनेवा प्रोटोकॉल*** की विफलता ने फ्रांस में घोर असंतोष की वातावरण बन गया। राष्ट्र संघ द्वारा अपनी सुरक्षा के प्रयत्न से निराश होकर उसने एक बिल्कुल नई नीति का श्रेय लिया जो बड़ा ही महत्वपूर्ण था। यह ***लोकार्नो समझौता*** के नाम से जाना जाता है।

पृष्ठभूमि

- फ्रांस ब्रिटेन की तरफ से निराश हो चुका था तथा वह जर्मनी से किसी तरह का समझौता करके अपने को सुरक्षित रखना चाहता था। फ्रांसीसी प्रधानमंत्री ***हेरियो*** तथा विदेश मंत्री ***ब्रियां*** इस बात के लिए उत्सुक थे कि आत्मरक्षा के लिए जर्मनी के साथ किसी नये समझौते की बात की जाए। फ्रांस का असल खतरा राइन क्षेत्र की ओर से था तथा इसके लिए वह स्पष्ट रूप से गारंटी पाना चाहता था। जर्मनी को भी फ्रांस के आक्रमण का भय था तथा 1922 से वह इस तरह के समझौते को लागू करने के लिए प्रयत्नशील था।

पृष्ठभूमि

- समझौते की रूपरेखा तैयार करने के लिए ***इंग्लैंड, फ्रांस ,बेल्जियम, जर्मनी ,इटली ,पोलैंड तथा चेकोस्लोवाकिया*** के प्रतिनिधियों ने ***स्विट्जरलैंड*** के ***लोकार्नो*** नामक स्थान पर ***अक्टूबर 1925*** में एक सम्मेलन किया। यहां राइन प्रदेश की सुरक्षा के संबंध में एक समझौता किया गया जो इतिहास में लोकार्नो समझौता कहलाता है ।यह पहला अवसर था जब जर्मनी के प्रतिनिधियों से भी समानता के आधार पर समझौता किया गया था।

लोकार्नो समझौता

- लोकार्नो पैक्ट वास्तव में अलग-अलग सात संधियों का समूह था। ***दिसंबर 1925*** को संबंधित देशों ने इसको स्वीकार कर इस पर हस्ताक्षर कर दिए। इस एक्ट के अनुसार निम्नलिखित महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए:-

1. इंग्लैंड, फ्रांस, बेल्जियम ,जर्मनी तथा इटली ने परस्पर यह वादा किया कि वह वर्साय संधि द्वारा निर्धारित जर्मनी तथा बेल्जियम की सीमा और जर्मनी तथा फ्रांस के मध्य की सीमा की रक्षा करेंगे। राइन कि प्रदेश में किलेबंदी नहीं की जायेगी।

लोकार्नो समझौता

- 2. सीमा भंग करने पर आक्रमणकारी के विरुद्ध सामूहिक रूप से कार्रवाई की जाएगी
- 3. झगड़ों का निर्णय वार्ता तथा समझौते द्वारा किया जाएगा। किसी भी विषय पर विवाद होने पर राष्ट्र संघ का निर्णय सर्वमान्य होगा।
- 4. युद्ध का परित्याग कर दिया जाएगा। समस्त विवाद शांतिमय उपायों से हल किए जाएंगे।

लोकार्नो समझौता

केवल तीन अवस्थाओं में ही युद्ध किया जा सकेगा-

1.आत्मरक्षा

2. सीमा भंग तथा

3. राष्ट्र संघ की आज्ञा

- 5. फ्रांस ने ***पोलैंड*** तथा ***चेकोस्लोवाकिया*** को यह वचन दिया कि यदि उन पर कोई देश आक्रमण करता है तो वह उसकी सहायता करेगा।

लोकार्नो संधि के गुण

- लोकार्नो की संधि का यूरोप के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। इससे पराजित तथा विजेता राष्ट्रों के मध्य समन्वय की भावना का प्रादुर्भाव हुआ। यह यूरोप में शांति स्थापना का सूचक था-

1. यह वार्साय संधि की भांति जर्मनी के लिए आरोपित संधि नहीं थी। इसको जर्मनी ने स्वेच्छा से स्वीकार किया था।
2. इसके अनुसार जर्मनी को राष्ट्र संघ में स्थान तथा काउंसिल की स्थाई सदस्यता मिल गई। इससे जर्मनी की प्रतिष्ठा में वृद्धि हो गयी। राष्ट्र संघ में जर्मनी के प्रवेश होने से वर्साय संधि की कठोर धाराओं में परिवर्तन होने लगा।

लोकार्नो संधि के गुण

- 3. इसे फ्रांस तथा जर्मनी के मध्य की दीर्घकालीन शत्रुता का अंत हो गया। फ्रांस को जर्मन आक्रमण से मक्ति मिल गई। फ्रांस के ***विदेश मंत्री ब्रिया*** ने कहा था- **यह जर्मनी तथा फ्रांसे दोनों के लिए शांति है।** इंग्लैंड के ***विदेश मंत्री चेम्बरलेन*** ने कहा था **-यह समझौता युद्ध तथा शांति के वर्षों की वास्तविक विभेदक रेखा है।**
- 4. इस समझौते में फ्रांस की सुरक्षा की मांग तथा जर्मनी की वर्साय संधि की धाराओं के संशोधन की मांग में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया गया था। यह फ्रांस तथा जर्मनी दोनों के मध्य एक न्याय पूर्ण समझौता था। इंग्लैंड ने दोनों देशों को एक -दूसरे के विरुद्ध रक्षा का आश्वासन दिया था ।

लोकार्नो संधि के दोष

- ***इतिहासकार कार*** ने इस समझौते के कई दोष बताएं है-

1. इंग्लैंड के दवारा जर्मनी की पश्चिमी सीमा को अधिक महत्व प्रदान की गई तथा पूर्वी सीमा की उपेक्षा की गई।
2. इस समझौते में पूर्वी सीमा की उपेक्षा की गई थी इससे पोलैंड तथा रूस का असंतुष्ट हो गए।
3. इंग्लैंड ने अपने हित को दृष्टि में रखते हुए जर्मनी की पश्चिमी सीमा का सुरक्षा का आश्वासन दिया परंतु पूर्वी सीमा के संबंध में उसने इस प्रकार का कोई आश्वासन नहीं दिया।

लोकार्नो संधि के दोष

- इसका अभिप्राय था कि जर्मनी अपनी पूर्वी सीमा को आगे बढ़ाने का प्रयत्न कर सकता है या वह पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया के उन प्रदेशों पर जिनमें जर्मन लोग बड़ी संख्या में निवास करते थे फिर से कब्जा करने का प्रयास कर सकता है। ब्रिटेन ने पूर्वी सीमा से संबंधित धाराओं पर अपनी गारंटी नहीं दी। इसका तात्पर्य था की पूर्वी सीमा की समस्या से उत्पन्न युद्ध की स्थिति में ब्रिटेन, जर्मनी के खिलाफ लड़ाई शुरू करने के लिए मजबूर नहीं होगा।

लोकार्नो संधि के दोष

- इससे यह सिद्ध हो गया कि इंग्लैंड की दृष्टि में राष्ट्र संघ के सिद्धांतों की अपेक्षा अपने हितों की सुरक्षा का अधिक महत्व है। इससे अन्य देशों को भी राष्ट्र संघ की उपेक्षा कर अपने हितों की पूर्ति के लिए प्रोत्साहन मिला।
- यह समझौता वर्साय संधि तथा राष्ट्र संघ दोनों के लिए विनाशकारी सिद्ध हुआ। प्रादेशिक समझौता और विश्वव्यापी समझौता एक दूसरे के दुश्मन होते हैं। लोकार्नो समझौता के कारण राष्ट्र संघ पर लोगों का विश्वास घटने लगा ।यह राष्ट्र संघ के भविष्य के लिए अच्छा नहीं था।